• वर्ष के दौरान बांड बाजार में अत्यधिक उतार-चढ़ाव देखा गया। मुद्रास्फीति की ऊँची दर और पण्यों की ऊँची कीमतों के कारण प्रतिकूल परिस्थितियों वाले बाजार में अधिक लाभ प्राप्त किया गया। इस कारण पहली दो तिमाहियों में हम अपने बांड कारोबार के लिए बाजार मूल्य पर प्रावधान कर पाए। वित्त वर्ष की दूसरी छमाही के दौरान भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा सीआरआर, एसएलआर घटाए जाने के साथ-साथ प्रतिभूतियों की वापसी खरीद की अनुमति प्रदान किए जाने से ब्याज दरों में स्थायित्व आया और ब्याज दरों में कमी का दौर शुरू हो गया। हमारी अर्थव्यवस्था की गति अचानक धीमी होने के बाद भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा ये उपाय किए गए। जनवरी 2009 में 10 वर्षीय आधार प्रतिफल वाले बांडों में लाभ तेजी से गिरकर 4.85% के स्तर पर आ गए जो अब तक का सबसे निम्न स्तर है। ये जुलाई 2008 में 9.53% के उच्च स्तर पर थे। अंतत: ये 31 मार्च 2009 को 7.01% पर रहे। जमाराशियों में अभूतपूर्व वृद्धि के परिणामस्वरूप सीआरआर और एसएलआर की बढ़ी हुई अपेक्षाओं के कारण समग्र देशी निवेशों में 31 मार्च 2008 की तुलना में रु. 64,724 करोड़ की वृद्धि हुई। वित्त वर्ष की दूसरी छमाही में चलनिधि की स्थिति में सुधार आया और इसके बाद यह पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध रही। भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा किए गए अनेक पूर्वोपायों और इनके परिणामस्वरूप लाभ कम होने के कारण हमें अपने बांडों में किए गए निवेशों की बिक्री से लाभ अर्जित करने का अवसर मिला।

• वर्ष के दौरान ग्लोबल मार्केट्स विभाग का निष्पादन संक्षेप में नीचे तालिका में दिया गया है।

(राशि करोड़ रुपए में)

| | 2007-08 | 2008-09 | वृद्धि % |
|---|---|---|---|
| निवेशों पर ब्याज से आय | 11,887 | 15,750 | 32.50 |
| अन्य आय-निवेशों की बिक्री से लाभ और विदेशी मुद्रा कारोबार से आय | 1,987 | 3,125 | 57.27 |
| विदेशी मुद्रा कारोबार में खरीद फरोख्त | 11,74,029 | 18,11,194 | 54.27 |
| देशीय ट्रेजरी कारोबार से औसत आय | 7.49 | 8.02 | 0.53 |

## ख. कारपोरेट बैंकिंग समूह

**ख.1** बैंक का कारपोरेट बैंकिंग समूह तीन कार्यनीतिक व्यवसाय इकाइयों से मिलकर बना है, जिनके नाम हैं - कारपोरेट लेखा समूह, परियोजना वित्त एवं लीजिंग एसबीयू और तनावग्रस्त आस्ति प्रबंधन समूह।

### ख.2 कारपोरेट लेखा समूह (सीएजी)

कारपोरेट लेखा समूह में वर्ष के दौरान सीएजी, अहमदाबाद शाखा के जुड़ जाने से समूह की शाखाओं की कुल संख्या 5 हो गई है, जो 489 कारपोरेट ग्राहकों को अपनी सेवाएँ प्रदान कर रही हैं। वर्ष के दौरान 42 नए कारपोरेट ग्राहकों को सीएजी में लाया गया।

• कारपोरेट लेखा समूह के रु. 68,866 करोड़ के अग्रिमों का बैंक के वाणिज्यिक और संस्थागत (खाद्यान्नेतर) अग्रिमों में 29% और कुल देशीय ऋणों में 15% हिस्सा है।

**तालिका : 2 कारपोरेट लेखा समूह - उल्लेखनीय तथ्य**

(राशि करोड़ रुपये में)

| विवरण | 31.03.2008 को | 31.03.2009 को | वृद्धि % |
|---|---|---|---|
| जमाराशियाँ | 9,843 | 19,702 | 100 |
| अग्रिम | 46,708 | 68,866 | 47 |

• कारपोरेट लेखा समूह विदेशी मुद्रा व्यवसाय में लगातार उच्च वृद्धि दर प्राप्त कर रहा है। इसने वर्षानुवर्ष 68% वृद्धि दर दर्ज की है। कारपोरेट लेखा समूह के विदेशी मुद्रा कारोबार का बैंक के कुल देशीय विदेशी मुद्रा टर्न ओवर में 53% हिस्सा है।

• अग्रिमों से होने वाली आय वर्ष 2007-08 में 8.57% थी, जो वर्ष 2008-09 में बढ़कर 9.98% हो गई।

• वर्ष के दौरान लेखा योजना प्रक्रिया शुरू की गई, जिससे समूह के बेहतर विपणन द्वारा कारपोरेट ग्राहकों की कारोबारी योजनाओं से जुड़ा जा सके और उन्हें उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप समाधान प्रदान किए जा सकें।

• शुल्क-आधारित सेवाओं पर ध्यान केंद्रित करने की पहल की बदौलत कारपोरेट लेखा समूह की शुल्क-आय में वर्ष के दौरान 66% की उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

• बैंक के सशक्त तुलन पत्र का लाभ उठाकर उच्च आय वाले ग्राहकों से बड़े पैमाने पर हामीदारी व्यवसाय जुटाया गया।

### लेनदेन बैंकिंग इकाई

समूह सहक्रिया के माध्यम से शुल्क आधारित आय बढ़ाने के लिए कारपोरेट बैंकिंग समूह में नकदी प्रबंध उत्पाद एवं इसी के अधीन व्यापार वित्त स्कंध के साथ लेनदेन बैंकिंग इकाई बनाई गई है.

### नकदी प्रबंध उत्पाद

एसबीआई फास्ट नामक अपने नकदी प्रबंध उत्पाद के लिए केंद्रीकृत समाधान व्यवस्था लागू की गई जिसे 379 शाखाओं में उपलब्ध कराया गया है। इसके माध्यम से कारपोरेट ग्राहकों की कागज पर और इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से होने वाली उगाहियों के साथ-साथ कारपोरेट ग्राहकों के कागज पर और इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से होने वाले भुगतानों की देखरेख की जाती है। नकदी प्रबंध उत्पाद (सीएमपी) में चलनिधि प्रबंधन की भी व्यवस्था है। इसका लक्ष्य बेहतर नकदी प्रबंध द्वारा कारपोरेटों की लाभप्रदता बढ़ाना और ब्याज लागतों में कमी लाना है।

### ख. 3 परियोजना वित्तपोषण और पट्टा कार्यनीतिक व्यवसाय इकाई

परियोजना वित्तपोषण-कार्यनीतिक व्यवसाय इकाई बिजली, दूरसंचार, सड़क, बंदरगाह, हवाई अड्डों, माल ढुलाई और अन्य आधारभूत

• The year witnessed heightened volatility in the bond market. Adverse market conditions, mainly on account of higher inflation and commodity prices, resulted in higher yields which led to mark-to-market provisions on our portfolio in the first two quarters. During the second half of the financial year, interest rates stabilized and headed downwards on account of reduction in CRR, SLR and buy back of securities by RBI prompted by the sudden slow down in our economy. The benchmark 10 year yields saw a sharp fall to 4.85% in January 09, the lowest on record, from a high of 9.53% in July 08 and finally closed at 7.01% on 31st March 2009. Increased requirement of CRR and SLR, a consequence of the unprecedented deposit growth, resulted in an increase in the overall domestic investment portfolio by Rs.64,724 crores over 31st March 2008. Liquidity position eased in the second half of the financial year and remained comfortable thereafter. The series of proactive measures taken by RBI and the resulting fall in bond yields provided us with an opportunity to book profit on sale of investments from our bond portfolio.

• Performance of Global Markets department during the year is summarised in the table below.

(Amount in Rs. Crores)

| | 2007-08 | 2008-09 | % Growth |
|---|---|---|---|
| Interest Income on Investments | 11,887 | 15,750 | 32.50 |
| Other Income - Profit on Sale of Investments and Forex Income | 1,987 | 3,125 | 57.27 |
| Trading Volume Forex Operations | 11,74,029 | 18,11,194 | 54.27 |
| Average Yield on Domestic Treasury Operations | 7.49 | 8.02 | 0.53 |

## B.CORPORATE BANKING GROUP

**B.1** The Bank's Corporate Banking Group consists of three Strategic Business Units viz., Corporate Accounts Group, Project Finance & Leasing SBU and Stressed Assets Management Group.

### B.2 Corporate Accounts Group (CAG)

Corporate Accounts Group, with addition of CAG, Ahmedabad Branch during the year, has five branches which cater to 489 Corporate clients. During the year, 42 new corporate clients were brought into the CAG fold.

- CAG's advances portfolio of Rs. 68,866 crores is 29 % of the C&I (Non-Food) credit of the Bank and constitutes 15 % of the total domestic credit portfolio of the Bank.

**Table : 2 CAG – Highlights**

(Amount in Rs. crores)

| Particulars | As on 31.03.2008 | As on 31.03.2009 | Growth % |
|---|---|---|---|
| Deposits | 9,843 | 19,702 | 100 |
| Advances | 46,708 | 68,866 | 47 |

- CAG continues to be on the high growth trajectory in forex business registering a YoY growth of 68%. CAG's forex business constituted 53 % of the total domestic forex turnover of the Bank.
- Yield on advances has improved from 8.57% in 2007-08 to 9.98% in 2008-09.
- Account Planning initiative was launched during the year to align better, the Group's marketing to the Business Plans of the corporate clients and to provide customised solutions.
- Focus on fee-based services saw the fee income of CAG registering an impressive 66% growth during the year.
- By leveraging Bank's balance sheet strength, substantial underwriting business was booked from large corporates.

### Transaction Banking Unit

The Transaction Banking Unit has been created in CBG with the Cash Management Product and Trade Finance wings under its fold to boost fee based income through Group Synergy.

### CASH MANAGEMENT PRODUCT

Cash Management Product with its brand name SBIFAST has migrated to a centralized solution covering 379 branches and handles paper and e-collections as well as paper and e-payments for Corporate clients. CMP also has a liquidity management module, which aims to enhance profitability to Corporates by facilitating better liquidity management and reducing interest costs.

### B.3 Project Finance & Leasing SBU

The Project finance-SBU focusses on funding projects in infrastructure sectors like power,

क्षेत्रों में परियोजनाओं के वित्तपोषण पर केंद्रित इकाई है। यह गैर आधारभूत परियोजनाओं का वित्तपोषण भी संभालती है। ये परियोजनाएँ न्यूनतम परियोजना लागत पर कतिपय सीमाओं में वित्तपोषित की जाती हैं। वर्ष के दौरान परियोजना ऋणों के समूहन और हामीदारी पर विशेष रूप से ध्यान दिया गया।

वर्ष 2008-09 के दौरान परियोजना वित्तपोषण कार्यनीतिक व्यवसाय इकाई ने अनेक परियोजनाओं के वित्तपोषण में सहभागिता की और अन्य बैंकों/संस्थाओं के साथ ऋण-समूहन में निम्नानुसार हिस्सेदारी की :

(राशि करोड़ रुपये में)

| विवरण | वित्तीय वर्ष 2008 | वित्तीय वर्ष 2009 | वृद्धि (%) |
|---|---|---|---|
| संस्वीकृत परियोजनाओं की कुल परियोजना लागत | 1,45,045 | 1,93,595 | लागू नहीं |
| कुल ऋण आवश्यकता | 92,558 | 1,33,894 | लागू नहीं |
| उपर्युक्त में से भारतीय स्टेट बैंक द्वारा संस्वीकृत ऋण | 20,195 | 25,854 | 28.02 |
| ऋण समूहन | 54,951 | 64,069 | 16.59 |

अन्य प्रमुख परियोजनाओं के अलावा, भारतीय स्टेट बैंक देश में ऐसी दो बृहत बिजली परियोजनाओं के लिए मार्गदर्शी बैंक भी है जिन्होंने वित्तीय लेखाबंदी हासिल कर ली है और ये वर्तमान में कार्यान्वयन अधीन हैं। परियोजना वित्तपोषण करारों पर नजर रखने वाले विश्लेषक निरंतर बैंक को एशिया प्रशांत क्षेत्र में/विश्व स्तर पर अग्रणी स्थान दे रहे हैं।

### ख.4 तनावग्रस्त आस्ति प्रबंधन समूह (एसएएमजी)

वर्ष 2008-09 के दौरान एसएएमजी का निष्पादन नीचे तालिका में दिया गया है :

**तालिका : 3 एसएएमजी-उल्लेखनीय तथ्य**

(राशि करोड़ रुपये में)

| | | |
|---|---|---|
| 1 | अलाभकारी आस्तियों (एनपीए) की नकद वसूली | 354 |
| 2 | मानक आस्तियों के रूप में कोटि उन्नयन | 245 |
| 3 | अपलेखन | 588 |
| 4 | अलाभकारी आस्तियों (1+2+3) में कुल कमी | 1187 |
| 5 | अपलिखित खातों में वसूली | 418 |

- तनावग्रस्त आस्ति प्रबंधन समूह (एसएएमजी) की शुरू में स्थापना रु. 5 करोड़ और उससे अधिक की बकाया राशि वाली सभी अलाभकारी आस्तियों के अभिग्रहण के लिए की गई थी। बाद में रु. 1 करोड़ और उससे अधिक राशि की सभी अलाभकारी आस्तियों का समाधान इसके कार्यक्षेत्र में लाया गया ताकि अलाभकारी आस्तियों के समाधान के लिए विशेष रूप से प्रयास किए जा सकें।
- 106 तनावग्रस्त आस्ति समाधान केंद्र (सार्क) की देशभर में स्थापना की गई जिससे एसएमई और वैयक्तिक खंडों में रु. 1 करोड़ तक की बकाया राशि वाली अलाभकारी आस्तियों के समाधान पर ध्यान केंद्रित किया जा सके। इनमें से 45 स्वतंत्र तनावग्रस्त आस्ति समाधान केंद्रों को चरणबद्ध ढंग से तनावग्रस्त आस्ति प्रबंधन समूह (एसएएमजी) की परिधि में लाया जा रहा है जिससे बैंक के वसूली प्रयासों में और गति लाई जा सके। तनावग्रस्त आस्ति समाधान केंद्रों का निष्पादन उत्साहवर्धक रहा और अनर्जक आस्तियों के प्रबंधन में महत्वपूर्ण प्रगति हासिल की गई। अलाभकारी आस्तियों के निवारण के लिए कार्यक्षम उपाय भी किए गए हैं और इन उपायों के अंतर्गत चुकौती में पहली चूक के समय ही ग्राहकों को स्मरण करा दिया जाता है।

### ग. मध्य कारपोरेट समूह (एमसीजी)

**तालिका : 4 एमसीजी - उल्लेखनीय तथ्य**

(राशि करोड़ रुपये में)

| विवरण | 31.03.2008 को | 31.03.2009 को | वृद्धि का % |
|---|---|---|---|
| जमाराशियां | 15,428 | 19,169 | 24.25 |
| अग्रिम (ऑफ-साइट को छोड़कर) | 85,887 | 1,06,466 | 23.96 |
| अग्रिम (ऑफ-साइट को शामिल करके) | 1,02,052 | 1,25,951 | 23.41 |

- समूह बैंक के कुल वाणिज्यिक एवं संस्थागत खाद्येतर अग्रिमों के लगभग 42% की देखरेख करता है. यह 8 क्षेत्रीय कार्यालयों और 53 शाखाओं के माध्यम से कार्य करता है।
- चालू वर्ष के दौरान मध्य कारपोरेट समूह के 540 नए मध्य कारपोरेट ग्राहक शामिल हुए।
- नए उन्नतिशील नगरों और 'श्रेणी II' के शहरों में मध्य कारपोरेट समूह ग्राहकों पर केंद्रित सेवा प्रदान करने की दृष्टि से 23 नए शाखेतर कार्यालय और पूर्ववर्ती स्टेट बैंक आफ सौराष्ट्र की 4 शाखाएँ मध्य कारपोरेट समूह में आ गईं।
- अग्रिमों की औसत आय मार्च 2008 के 9.73% के स्तर से बढ़कर मार्च 2009 में 11.62% हो गई।

**नए प्रयास**

- ई-ट्रेड एसबीआई उत्पाद प्रारंभ किया गया जिसमें विपणन का दायित्व मध्य कारपोरेट समूह को सौंपा गया। इस उत्पाद से ग्राहक चौबीसों घंटे सातों दिन अपने कार्यालय या किसी अन्य स्थान से अपना लेनदेन कर सकते हैं और वेब आधारित सॉफ्टवेयर के माध्यम से लेनदेन पर नजर रख सकते हैं।

telecom, roads, ports, airports, logistics and others. It also handles non-infrastructure projects with certain ceilings on minimum project cost. During the year, the focus was on syndication and underwriting of project loans.

During 2008-09, Project Finance-SBU participated in funding of numerous projects and took up syndication of debt with other banks / institutions as given in the chart:

(Amount in Rs. crores)

| Particulars | FY 2008 | FY 2009 | Growth (%) |
|---|---|---|---|
| Aggregate Project Cost of projects sanctioned | 1,45,045 | 1,93,595 | N. A. |
| Aggregate Debt requirement | 92,558 | 1,33,894 | N. A. |
| Of the above, Debt sanctioned by SBI | 20,195 | 25,854 | 28.02 |
| Debt syndication | 54,951 | 64,069 | 16.59 |

Besides other major projects, SBI is also the Lead Bank for the two Ultra Mega Power Projects in the country which have achieved financial closure and are presently under implementation. Analysts tracking project finance deals have been consistently ranking the Bank in leading positions in the Asia Pacific Region/globally.

### B.4 Stressed Assets Management Group (SAMG)

The performance of SAMG during the year 2008-09 is given in the table below.

**Table : 3 SAMG – Highlights**

(Amount in Rs. crores)

| | | |
|---|---|---|
| 1 | Cash Recovery in NPA | 354 |
| 2 | Upgradation to Standard Assets | 245 |
| 3 | Write Offs | 588 |
| 4 | Gross reduction in NPAs (1+2+3) | 1187 |
| 5 | Recovery in written off accounts | 418 |

- Stressed Assets Management Group (SAMG), originally set up to take over all NPAs with outstandings of Rs.5 crores and above, has expanded its role to resolve all NPAs of Rs.1 crore and above across the country with a view to provide focussed efforts in resolution of NPAs.
- 106 Stressed Assets Resolution Centres (SARCs) have been opened across the country for focussed resolution of NPAs with outstandings upto Rs.1 crore in SME and Personal segments. Out of these, 45 independent SARCs were brought under SAMG in a phased manner to give further fillip to the Bank's recovery efforts. The performance of SARCs is encouraging and substantial progress in the Management of NPAs has been achieved. Proactive steps have also been taken for prevention of NPAs by making demands on customers BEFORE DEFAULT and on FIRST DEFAULT.

## C. MID-CORPORATE GROUP (MCG)

**Table : 4 MCG – Highlights**

(Amount in Rs. crores)

| Particulars | As on 31.03.2008 | As on 31.03.2009 | growth % |
|---|---|---|---|
| Deposits | 15,428 | 19,169 | 24.25 |
| Advances (Excluding off-site) | 85,887 | 1,06,466 | 23.96 |
| Advances (Including off-site) | 1,02,052 | 1,25,951 | 23.41 |

- The Group handles about 42% of the total C&I non-food advances of the Bank. It operates through 8 Regional Offices and 53 branches.
- 540 new mid-corporate clients were added by the MCG during the current year.
- To ensure focussed service to MCG customers in upcoming towns and "Tier II" cities, 23 new off-site branches and 4 erstwhile SBS branches have been added to MCG.
- The average yield on advances went up from 9.73% in March 2008 to 11.62% in March, 2009.

### Initiatives taken

- e-Trade sbi has been launched with marketing under the ownership of MCG. The product enables customers to handle their transactions from their office or any other place 24x7 and keep track of the transactions through web based software.